मैथिली (अनिवार्य भाषा)

Part-I

(Sc. Arts, Com.)

Lecture No-10

Unit-5

डॉ. अरविन्द झा
सहायक प्राध्यापक
मैथिली विभाग
मारवाड़ी महाविद्यालय
दरभंगा
मो.- 9040201409

कविता-संग्रह
कविक साहित्यिक परिचय
गोविन्द दास

गोविन्द दास न्याय शास्त्रक विद्वान छलाह। हिनक जन्म 16म शताब्दी मे दरभंगा जिलाक रैयाम गाम मे भेल छला। मैथिली साहित्य मे विद्यापतिक परवर्ती गोविन्द दासक नाम अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि। बंगला साहित्य मे हिनका दोसर विद्यापति कहल जाइछ।

ई न्याय शास्त्रक अध्ययनक हेतु नवद्वीप गेलाह जे चैतन्य महाप्रभुक लीला क्षेत्र छल। गोविन्द दास ओतहि अपन पद रचना कयल। हिनक कविताक मूल मधुर रस वा भक्ति रस अछि। शृंगार रसक आवरण मात्र कयल गेल अछि। शृंगारक आवरणो रहला पर भितरमे

भक्ति गीतिक आदि। ई विद्यापति के
काव्य गुरु मानल छलाह —

"कविपति विद्यापति मतिमान
जाके गीत जगजन चोराओल
गोविन्द गौरि सरस रसगान।"

गोविन्द दास अपन
श्रृंगार रस के अहो मैथिल भाषा के
हेरवाल छथि। राधाक अंग प्रत्यंग के
कुसुम के समानता देखैत कहल
छथि —

"कानन कुसुम तोरल कि गोरी
कुसुमहि सब तह निरमिल तोरी
आनन हेत सरोरुह नास
सौरभ श्याम भ्रमर मिलु पास।"

आ मधुरिका राधाक
अभिसारक पूर्विराग के तीव्र वर्णनु प्रभाउ-
शालि वर्णन करइ छथि -

"कठक गारि, कुच कुमकुम पहिरल
नेओरि चोरिह आँखि।
गागरि भरि दाहिर पिछइल
चल नहि अंगुलि चाँपि"

प्रवास मथुरा गमनक
पश्चात राधाक विरह दशाक वर्णन
बड़ मार्मिक कहने छथि। मैथिल के
आत्मा बिल आदि —

"काहु - काहु कहि पुकारै सुन्दरी
दिन रजनी नहि जानि
अंगुलिक मुँदरि कोई भेल कंकण
कंकण गेलक हार।"

डॉ जयकान्त मिश्र हिनक हास्य रसक प्रशंसा लिखने छथि —

"Humour predominates the play. It is evident in the central situation as well in the minor places."

हिनक गीतक सम्बन्धमे डॉ सुकुमार सेन सेहो लिखने छथि जे —

"Sweet to the tongue and treat to the ears Govind das composes his radiant songs."

वस्तुतः गोविन्ददासक भणिता विद्यापति सँ अनुप्राणित अछि। यदि विद्यापति कविक भाव सौन्दर्य छल तँ गोविन्ददासक कविताक भाषा सौन्दर्यक प्रधानता। प्रो. रमानाथ झा हिनक कविता केँ 'नारिकेल फल सम्मित' क कहलनि अछि। अर्थात हिनक काव्यक सुस्वादक हेतु परिश्रम करय पड़ैत छैक आ अर्थ सुझला उपरान्त आनन्दक अनुभूति करैत छी।

प्रकृत गुणक अभाव रहलाक कारणे हिनक पद लोकक जीह पर नहि चढ़ल। परन्तु हिनक पद साहित्यिक हेतु मैथिली साहित्य मध्य अपन अक्षुण्ण स्थान रखैछ।

डॉ. अरविन्द झा